



छत्तीसगढ़

शिक्षक पात्रता परीक्षा

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल, सयपुर

भाग - 4

कला वर्ग (कक्षा 6-8)

इतिहास व राजव्यवस्था



विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	इतिहास के स्रोत	1
2	सिन्धु घाटी सभ्यता	5
3	वैदिक युग	9
4	मौर्य साम्राज्य	13
5	मौर्योत्तर काल	16
6	गुप्त काल और गुप्तोत्तर काल	18
7	भक्ति और सूफी आंदोलन	22
8	प्रारंभिक मध्यकालीन भारत	27
9	अरब आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत	29
10	मुगल साम्राज्य	34
11	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	40
12	18वीं शताब्दी का भारत और भारत में ब्रिटिश विस्तार	41
13	ब्रिटिश प्रशासन (1757–1857)	44
14	1857 का विद्रोह एवं उसके परिणाम	46
15	ब्रिटिश भारत के विरुद्ध जन आंदोलन	49
16	सामाजिक-धार्मिक आंदोलन	51
17	राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	55
18	राष्ट्रीय आंदोलन (1905–1919)	58
19	गांधी युग और राष्ट्रीय आंदोलन (1919–1940)	61
20	स्वतंत्रता की ओर (1940 - 1947)	68
21	भारतीय संविधान का निर्माण	71
22	भारतीय संविधान की विशेषताएँ	75
23	प्रस्तावना	80

विषयसूची

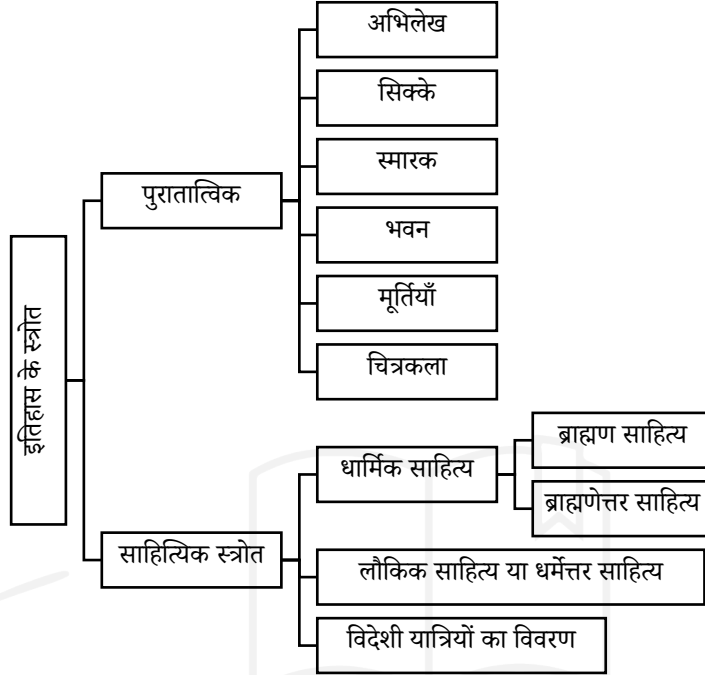
S No.	Chapter Title	Page No.
24	मूल अधिकार	82
25	नीति निदेशक सिद्धांत	87
26	मौलिक कर्तव्य	89
27	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	90
28	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	96
29	संसद	98
30	न्यायपालिका	105
31	राज्य विधानमंडल	113
32	स्थानीय स्वशासन	119
33	समाज की भारतीय संकल्पना	126
34	वर्तमान सामाजिक समस्याएँ – जातिवाद, सांप्रदायिकता, गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी	132

1

CHAPTER

इतिहास के स्रोत

इतिहास की सभी घटनाएँ उन स्रोतों पर निर्भर करती हैं जिनके माध्यम से कोई विशेष विवरण लिखा गया है।



पुरातात्विक स्रोत

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में पुरातात्विक स्रोतों को सर्वाधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय माना जाता है। इन स्रोतों के माध्यम से हमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त होती है। पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत मुख्यतः **अभिलेख, सिक्के, मूर्तियाँ, स्मारक, भवन, स्तूप, चित्रकला तथा अवशेष (मुहरें आदि)** शामिल किए जाते हैं।

1. अभिलेख

- पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेख सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। पत्थरों की शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों एवं प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेखों को अभिलेख कहा जाता है।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- भारत के अब तक ज्ञात सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक से संबंधित हैं, जिनकी तिथि लगभग 300 ई.पू. मानी जाती है।

- अशोक के अभिलेखों से उसके धर्म, नैतिक आदर्शों और राजकीय दृष्टिकोण पर प्रकाश पड़ता है। अधिकांश अशोक अभिलेख ब्राह्मी लिपि में हैं, जबकि उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में मिलते हैं, जो दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने पहली बार ब्राह्मी लिपि में लिखे अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की।
- गुप्त काल से पूर्व के अभिलेख सामान्यतः प्राकृत भाषा में हैं, जबकि गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में संस्कृत भाषा का व्यापक प्रयोग हुआ।

स्मरणीय प्रमुख अभिलेख

- हाथीगुम्फा अभिलेख – खारवेल के शासनकाल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण
- जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख – रुद्रदमन की विजयों एवं व्यक्तित्व का वर्णन
- नासिक अभिलेख – सातवाहन शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी की सैन्य उपलब्धियाँ

- **प्रयाग स्तम्भ लेख (प्रशस्ति)** – समुद्रगुप्त की दिग्विजय नीति का विवरण
- **मन्दसौर अभिलेख** – यशोधर्मन की सैनिक सफलताएँ
- **एहोल अभिलेख** – पुलकेशिन द्वितीय और हर्ष के युद्ध का वर्णन
- **ग्वालियर अभिलेख** – गुर्जर-प्रतिहार शासकों, विशेषतः भोज, की जानकारी
- **देवपाड़ा अभिलेख** – बंगाल शासक विजयसेन के शासन की घटनाएँ

2. सिक्के

- सिक्कों के अध्ययन को **न्यूमिसमैटिक्स** कहा जाता है। सिक्के आर्थिक इतिहास के साथ-साथ राजनीतिक सत्ता, धर्म और व्यापारिक संबंधों को समझने में सहायक होते हैं।
- प्राचीन भारत में सिक्के **तांबा, चांदी, सोना और सीसा** धातुओं से बनाए जाते थे।
- प्रारम्भिक सिक्कों पर केवल **चिह्न** होते थे, जबकि बाद के सिक्कों पर **राजाओं, देवताओं, तिथियों और लेख** का अंकन मिलने लगता है।
- भारत के **सबसे प्राचीन सिक्के आहत या पंचमार्क सिक्के** हैं, जिनकी तिथि लगभग **5वीं शताब्दी ई.पू.** है। ये सिक्के ठप्पा मारकर बनाए जाते थे और इन पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्धचंद्र आदि चिह्न अंकित होते थे। आहत सिक्कों की प्राचीनतम निधियाँ **मगध और पूर्वी उत्तर प्रदेश** से प्राप्त हुई हैं।
- **सातवाहन शासकों ने सीसे के तथा गुप्त शासकों ने स्वर्ण सिक्कों** का व्यापक प्रचलन किया।
- हिन्द-यूनानी शासकों ने भारत में **पहला स्वर्ण सिक्का** प्रचलित किया।

3. मूर्तिकला

- मूर्तियों के माध्यम से तत्कालीन कला, धर्म और समाज की सजीव झलक मिलती है।
- **कुषाण काल की गांधार कला** पर विदेशी (यूनानी) प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।
 - **मथुरा कला** पूर्णतः स्वदेशी परंपरा पर आधारित थी।
 - **भरहुत, बोधगया और अमरावती** की मूर्तियों में सामान्य जन-जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

4. स्मारक, भवन एवं स्तूप

- प्राचीन स्मारक और स्थापत्य अवशेष वास्तुकला के विकास को समझने में सहायक हैं।
- मंदिर स्थापत्य की तीन प्रमुख शैलियाँ हैं –
 - ✓ **नागर शैली** (उत्तर भारत)
 - ✓ **द्राविड़ शैली** (दक्षिण भारत)
 - ✓ **वेसर शैली** (दक्षिण पथ/मध्य क्षेत्र)
- **साँची, सारनाथ और अमरावती** जैसे स्तूप बौद्ध स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** के नगर अवशेष विकसित नगरीय योजना को दर्शाते हैं।
- **नालन्दा** के अवशेष प्राचीन शिक्षा प्रणाली की उन्नति को प्रमाणित करते हैं।
- दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया में प्राप्त मंदिर एवं स्तूप भारतीय संस्कृति के **विदेशों में प्रसार** का संकेत देते हैं।

5. चित्रकला

- चित्रकला से उस समय के सामाजिक जीवन, भावनाओं और कलात्मक स्तर की जानकारी मिलती है।
- **अजन्ता की गुफाओं के चित्र** मानवीय संवेदनाओं की अत्यंत सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं।
- **‘माता और शिशु’** तथा **‘मरणासन्न राजकुमारी’** जैसे चित्र गुप्तकालीन कला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

6. अवशेष एवं मुहरें

- अवशेषों में प्राप्त **मुहरें** प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में अत्यंत सहायक हैं।
- **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो** की मुहरों से धार्मिक विश्वासों की जानकारी मिलती है।
- **बसाढ़** से प्राप्त मिट्टी की मुहरें व्यापारिक श्रेणियों और आर्थिक गतिविधियों को दर्शाती हैं।

साहित्यिक स्रोत

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में साहित्यिक स्रोतों का विशेष महत्व है। इन स्रोतों से हमें तत्कालीन **धार्मिक विश्वासों, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक विकास तथा बौद्धिक चेतना** की जानकारी प्राप्त होती है। प्राचीन भारतीय साहित्य को व्यापक रूप से **धार्मिक साहित्य** और **धर्मन्तर (लौकिक) साहित्य** में वर्गीकृत किया जाता है।

धार्मिक साहित्य

धार्मिक साहित्य वह साहित्य है, जिसका संबंध किसी न किसी धर्म या धार्मिक परंपरा से होता है। इसे पुनः **ब्राह्मण साहित्य** तथा **ब्राह्मणेत्तर साहित्य** में विभाजित किया जा सकता है।

1. ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण साहित्य में वे ग्रंथ सम्मिलित हैं, जो मुख्यतः **वैदिक धर्म एवं ब्राह्मण परंपरा** से संबंधित हैं। इन ग्रंथों के माध्यम से तत्कालीन धार्मिक अनुष्ठानों, दार्शनिक विचारों और सामाजिक मूल्यों की जानकारी मिलती है।
- ब्राह्मण साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं—
 - ✓ वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद
 - ✓ वेदांग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष
 - ✓ उपनिषद् – आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष संबंधी दार्शनिक चिंतन
 - ✓ रामायण एवं महाभारत – धार्मिक एवं नैतिक आदर्शों का प्रस्तुतीकरण
 - ✓ पुराण – सृष्टि, वंशावली और धार्मिक कथाएँ
 - ✓ स्मृति ग्रंथ – सामाजिक एवं विधिक नियमों का वर्णन

2. ब्राह्मणेत्तर साहित्य

- ब्राह्मणेत्तर साहित्य में वे ग्रंथ आते हैं, जो ब्राह्मण धर्म से इतर धार्मिक परंपराओं से संबंधित हैं। इसमें मुख्यतः **बौद्ध और जैन साहित्य** शामिल हैं।

a. बौद्ध साहित्य

- ✓ बौद्ध साहित्य से बौद्ध धर्म के सिद्धांतों, संघ व्यवस्था और ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसके अंतर्गत प्रमुख ग्रंथ हैं—

- ✓ त्रिपिटक (विनय, सुत्त और अभिधम्म पिटक)
- ✓ दीपवंश एवं महावंश – बौद्ध इतिहास से संबंधित ग्रंथ
- ✓ मिलिन्दपन्हो – राजा मिलिंद और नागसेन के संवाद
- ✓ बुद्धचरित – गौतम बुद्ध का जीवन वृत्तांत

b. जैन साहित्य

- ✓ जैन साहित्य से जैन धर्म के सिद्धांतों, तीर्थंकरों और नैतिक नियमों की जानकारी मिलती है। इसके प्रमुख ग्रंथ हैं - **आगम ग्रंथ, कल्पसूत्र, भगवतीसूत्र, परिशिष्ट पर्व**

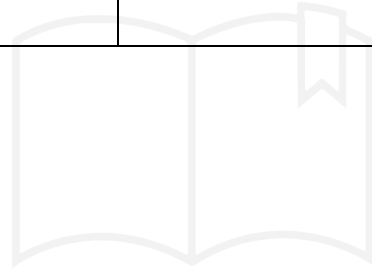
धर्मेत्तर (लौकिक) साहित्य

- धर्मेत्तर या लौकिक साहित्य का संबंध किसी विशेष धर्म से नहीं होता है। यह साहित्य ऐतिहासिक घटनाओं, प्रशासन, भाषा-विज्ञान, राजनीति तथा व्यक्तित्वों के जीवन पर आधारित होता है।
- लौकिक साहित्य के अंतर्गत निम्न प्रकार के ग्रंथ आते हैं - **ऐतिहासिक ग्रंथ, जीवनीयाँ, कल्पना प्रधान साहित्य**
- प्रमुख धर्मेत्तर ग्रंथ हैं -
- अर्थशास्त्र – कौटिल्य द्वारा रचित, जिसमें शासन और प्रशासन की विस्तृत जानकारी मिलती है
- अष्टाध्यायी – पाणिनि द्वारा रचित, संस्कृत व्याकरण का आधार ग्रंथ
- राजतरंगिणी – कल्हण द्वारा लिखित, कश्मीर का इतिहास
- हर्षचरित – बाणभट्ट द्वारा रचित, सम्राट हर्ष का जीवनवृत्त

विदेशी यात्रियों का विवरण :

विदेशी यात्री	देश	काल / शासक	प्रमुख ग्रंथ	भारत संबंधी प्रमुख विवरण
मेगस्थनीज	यूनान	चंद्रगुप्त मौर्य	इंडिका	मौर्य प्रशासन, समाज, भूगोल का वर्णन
डाइमेकस	यूनान	बिंदुसार	—	मेगस्थनीज के विवरणों की पुष्टि
फाह्यान	चीन	चंद्रगुप्त द्वितीय	बौद्ध राज्यों का वृत्तांत	गुप्तकालीन धार्मिक व सामाजिक जीवन
हेनसांग	चीन	हर्षवर्धन	ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजन्स	राजनीति, धर्म, नालंदा का वर्णन
आई-त्सिंग	चीन	चालुक्य-पल्लव काल	—	बौद्ध मठ, नियम व भिक्षु जीवन

अल-बरुनी	फारस	महमूद गजनवी	तहकीक-ए-हिंद	भारतीय विज्ञान, समाज व संस्कृति
अल-मसूदी	अरब	10वीं शताब्दी	मेडोज ऑफ गोल्ड	समुद्री व्यापार, धर्म व समाज
मार्को पोलो	इटली	13वीं शताब्दी	—	दक्षिण भारत का व्यापार व समृद्धि
इब्न बतूता	मोरक्को	मुहम्मद बिन तुगलक	रिहला	दिल्ली सल्तनत का प्रशासन
निकोलो डे कोंटी	इटली	देव राय I-II	—	विजयनगर की भव्यता व समाज
अब्दुर रज्जाक	फारस	ज़मोरिन	यात्रा वृत्तांत	कालीकट का बंदरगाह व समुद्री व्यापार
अथानासियस निकितिन	रूस	15वीं शताब्दी	ट्रेवल्स ऑफ निकितिन	व्यापार, राजनीति व सामाजिक जीवन
दुआर्टे बारबोसा	पुर्तगाल	16वीं शताब्दी	—	जाति व्यवस्था, केरल व गोवा
डोमिंगो पायस	पुर्तगाल	कृष्णदेव राय	—	विजयनगर की शक्ति व वैभव
फर्नाओ नुनिज़	पुर्तगाल	अच्युत देव राय	—	त्योहार, महिलाओं की स्थिति
जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर	फ्रांस	शाहजहाँ-औरंगजेब	यात्रा विवरण	हीरा व्यापार, मुगल अर्थव्यवस्था
फ्रांस्वा बर्नियर	फ्रांस	औरंगजेब	ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर	मुगल समाज व राजनीति की आलोचना



ToppersNotes
Unleash the topper in you

2


CHAPTER

सिंधु घाटी सभ्यता



- यह दक्षिण-पश्चिम एशिया के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक कांस्य युग की सभ्यता थी।
- मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की तीन सबसे प्राचीन और व्यापक प्राचीन सभ्यताओं में से एक थी।
- हड़प्पा: खोज - सर्वप्रथम 1921 में पंजाब (पाकिस्तान) के हड़प्पा स्थान पर दयाराम साहनी द्वारा।
- ✓ हालाँकि 1872-73 में सर अलेक्जेंडर कनिंघम (ASI के महानिदेशक) द्वारा इसका प्रारंभिक अन्वेषण किया गया।
- **दक्षिण एशिया की पहली नगरीय संस्कृति;** उन्नत नगर नियोजन, वास्तुकला और सामाजिक संगठन के लिए जानी जाती है।
- **सभ्यता का विस्तार:** महाराष्ट्र में दैमाबाद (सबसे दक्षिण), उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (सबसे पूर्व), पाकिस्तान में सुत्कांगेडोर (सबसे पश्चिम) और जम्मू में मांडा (सबसे उत्तर)।

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:

स्थल, स्थान एवं नदी	मुख्य विशेषताएँ
हड़प्पा, पंजाब (पाकिस्तान), रावी नदी 	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन दयाराम साहनी (1921)। ➤ यह सिंधु घाटी सभ्यता का खोजा गया पहला स्थल है जहाँ से पत्थर की पुरुष नृत्य मूर्ति (नटराज), दो कतारों में छह अनाज भंडार, लाल बलुआ पत्थर की पुरुष मूर्ति, पत्थर के लिंग और योनियाँ, मातृदेवी की मूर्तियाँ, पासे और समाधि संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए।
मोहनजोदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: जॉन ह्यूबर्ट मार्शल के अधीन आर. डी. बनर्जी (1922) ➤ यहाँ से विशाल अन्नागार और विशाल स्नानागार (ईंटों से बने) के साथ पशुपति मुद्रा, पक्के स्नानागार, नृत्य करती युवती की कांस्य प्रतिमा (10.5 सेमी, त्रिभंग मुद्रा), पुरोहित राजा की मूर्ति (स्टियटाइट पत्थर), योजनाबद्ध दुर्ग और निम्न नगर, लगभग 700 कुएँ तथा दाह संस्कार के बाद दफनाने के प्रमाण आदि भी प्राप्त हुए।
चन्हूदड़ो, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एम. जी. मजुमदार (1931)। ➤ यह स्थल सिंधु सभ्यता का प्रमुख हस्तशिल्प केंद्र था — यहाँ से मनके बनाने, सीप काटने, मुद्राएँ और बाट (भार मापन) बनाने के प्रमाण मिले। साथ ही कुत्ते के पंजे के निशान, मिट्टी की बैलगाड़ी और कांस्य की खिलौना गाड़ी भी मिली।
लोथल, गुजरात, भोगवा-साबरमती संगम	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1954-63)। ➤ यह सिंधु सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह नगर था — यहाँ गोदी (dockyard), धान की भूसी के अवशेष (धान की खेती का प्रमाण), मेसोपोटामिया से व्यापार, दोहरा शवाधान, मनके बनाने के कारखाने, हाथी-दाँत की स्केल, नाव, अग्नि-वेदी और कार्नेलियन पत्थर आदि मिले।
सुरकोटड़ा, गुजरात, शादी कौर नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1964)। ➤ यहाँ अंडाकार एवं बर्तनयुक्त-कब्रों और घोड़े की अस्थियों के प्रमाण मिले।

कालीबंगा, राजस्थान, दृशद्वती (घग्गर/सरस्वती नदी)	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: अमलानंद घोष (1953); बी. बी. लाल (1960 के दशक)। ➤ यहाँ चूड़ी कारखाना, जोते हुए खेत का साक्ष्य, ऊँट की अस्थियाँ, अग्नि-वेदी, गेहूँ और जौ के लिए क्रॉस-फरो (आड़े-टेढ़े खेत), पकी हुई ईंटों की नालियाँ और ताँबे की वस्तुएँ मिली।
बनावली, हरियाणा, रंगोई	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (1974-77)। ➤ यह पूर्व-हड़प्पा और उत्तर-हड़प्पा, दोनों चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ जौ के दाने, लाजवर्द (लैपिस लाजुली), अग्नि-वेदी, वृत्ताकार सड़कें और मिट्टी के हल मिले।
धोलावीरा, गुजरात (कच्छ), मानहर एवं मंसर (लूणी बेसिन)	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी (1967); आर. एस. बिष्ट (1990-2005)। ➤ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (2021)। ➤ यहाँ पत्थर के जलाशय, अभिलेखित सूचनापट्ट, प्रथम ज्ञात खगोलीय वेधशाला और तीन भागों (दुर्ग, मध्य नगर तथा निम्न नगर) वाला नगर विन्यास पाया गया।
रोपड़ (रूपनगर), पंजाब, सतलुज नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1953)। ➤ यह स्वतंत्रता के बाद पहला उत्खनित सिंधु सभ्यता स्थल था। यहाँ कुत्ते और मनुष्य का संयुक्त शवाधान तथा ताँबे की कुल्हाड़ी मिली।
सुत्कांगेडोर, बलूचिस्तान (पाकिस्तान), दशत नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: ऑरैल स्टीन (1927)। ➤ यहाँ राख से भरा पात्र, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी के बर्तन मिले और यह मेसोपोटामिया के साथ व्यापार हेतु बंदरगाह के रूप में कार्य करता था।
राखीगढ़ी, हरियाणा	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: अमरेन्द्र नाथ (1997); दक्कन कॉलेज (2011-16)। ➤ यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है — यहाँ प्रारंभिक, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा तीनों चरणों के प्रमाण मिले हैं तथा योजनाबद्ध आवास, कालीबंगा जैसे मिट्टी के बर्तन और बच्चों के 'पिट्टू' (हॉपस्कॉच) खेल के चिन्ह मिले।
रंगपुर, गुजरात, मदार नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1931; 1953-54)। ➤ यहाँ हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पा-कालीन अवशेष, पीले-धूसर रंग के बर्तन और धान की खेती के साक्ष्य मिले।
आलमगीरपुर, उत्तर प्रदेश, हिंडन (यमुना की सहायक) नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: वाई. डी. शर्मा (1958)। ➤ उत्तर-हड़प्पा काल का स्थल जहाँ ताँबे की धारदार ब्लेड और एक पात्र पर कपड़े की छाप मिली।
कोटदीजी, सिंध (पाकिस्तान)	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एफ. ए. खान (1955)। ➤ पूर्व-हड़प्पा स्थल — यहाँ किलेबंदी, सींग वाले देवता की आकृतियों के साथ लाल एवं हल्के पीले बर्तन मिले हैं।
आमरी, सिंध (पाकिस्तान), सिंधु नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एन. जी. मजुमदार (1929)। ➤ पूर्व-हड़प्पा संक्रमणकालीन संस्कृति का स्थल — यहाँ से 'गैंडे' के अवशेष मिले।
दैमाबाद, महाराष्ट्र, प्रवरा (गोदावरी की सहायक) नदी	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: बी. पी. बोपार्डिकर (1958); एस. आर. राव (1974-75)। ➤ यहाँ कांस्य निर्मित रथ, बैल, हाथी और गैंडे की प्रतिमाएँ मिली।
इनामगाँव, महाराष्ट्र (पुणे जिला), घोड़ नदी (भीमा की सहायक)	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एच. डी. सांकलिया (1968-82, दक्कन कॉलेज)। ➤ ताम्रपाषाणकालीन स्थल — यहाँ से गेहूँ, जौ, मसूर की खेती, सिंचाई नहर, मिट्टी के घर, उत्तरमुखी शवदाह और बच्चों को घर के भीतर दफनाने के प्रमाण मिले हैं।

नागेश्वर, गुजरात (जामनगर के पास, सौराष्ट्र तट), अरब सागर तट	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: एस. आर. राव (1955)। ➤ यह सीप-कार्य का केंद्र और तटीय बस्ती थी — यहाँ से मनके, चूड़ियाँ, आभूषण और मेसोपोटामिया से व्यापार के प्रमाण मिले।
शोर्तुगई, अफगानिस्तान, ऑक्सस (अमू दरिया)	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: फ्रेंच पुरातत्व मिशन (1970 का दशक, हेनरी-पॉल फ्रेंकफर्ट)। ➤ सिंधु सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल — यहाँ लाजवर्द व्यापार (बदख्शा की खान से), कार्नेलियन और फ़िरोज़ा मनके तथा भंडारण पात्र मिले।
भिराणा, फतेहाबाद जिला, हरियाणा, सरस्वती	<ul style="list-style-type: none"> ➤ उत्खननकर्ता: आर. एस. बिष्ट (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, 2003-04)। ➤ यह सबसे प्राचीन सिंधु सभ्यता स्थल (~7570-6200 ई.पू.) है — यहाँ से पूर्व-हड़प्पा कालीन कृषि और मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिले।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ:

1. नगर नियोजन और अवसंरचना

- ✓ नगर आयताकार ग्रिड योजना के अनुसार बनाए गए थे, जिनमें सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थी।
- ✓ निर्माण कार्य में पकी हुई मिट्टी की ईंटों का उपयोग किया गया था, जिन्हें जिप्समगारे से जोड़ा जाता था।
- ✓ निकासी प्रणाली भूमिगत थी, जो घरों को मुख्य सड़कों की नालियों से जोड़ती थी, जिससे उचित स्वच्छता बनी रहती थी।
- ✓ दुर्ग पश्चिमी भाग में मिट्टी की ईंटों के ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था और इसे निचले नगर से अलग रखा गया था।
- ✓ सड़कें चारों मुख्य दिशाओं में फैली थी जो सुव्यवस्थित नगर योजना को दर्शाती हैं।
- ✓ कालीबंगा में स्थित घरों में दीवार से घिरे कमरे होते थे, जिनमें बाहरी प्रवेशद्वार भी होता था और कभी-कभी उन्हें राहगीरों द्वारा उपयोग किया जाता था।
- ✓ अनाज भंडारण के लिए ईंटों के गोलाकार चबूतरे पर विशाल अन्नागार बनाए जाते थे।

2. कृषि

- ✓ मुख्य फसलें थी: गेहूँ (मुख्य आहार), चावल, बाजरा, जौ, मसूर, चना और तिल।
- ✓ मेहरगढ़ में लगभग 7000 वर्ष पूर्व कपास की खेती की जाती थी, जिससे यह विश्व की सबसे प्रारंभिक कपास उत्पादक सभ्यताओं में से एक बन जाती है।
- ✓ खेतों की जुताई के लिए लकड़ी के हल का उपयोग किया जाता था।

- ✓ पालतू पशुओं में बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, कुत्ता, बिल्ली, गधा, कूबड़ वाले बैल और ऊँट शामिल थे जिन्हें कृषि कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता था।

3. धार्मिक आस्थाएँ:

- ✓ लिंग, योनि और मातृदेवी की मूर्तियाँ धार्मिक प्रथाओं का संकेत देती हैं।
- ✓ कोई मंदिर नहीं मिला है, जिससे प्रतीत होता है कि पूजा प्रतिमाओं और मूर्तियों के माध्यम से की जाती थी।
- ✓ शावाधान प्रथाओं में लकड़ी के ताबूत (हड़प्पा), दोहरी कब्रें (लोथल), ईंटों के कक्ष (कालीबंगा) और बर्तनयुक्त-कब्रें (सुरकोटाड़ा) शामिल थी।
- ✓ कब्रों में मिट्टी के बर्तन, आभूषण, मनके और ताँबे के दर्पण आदि जैसी वस्तुएँ रखी जाती थी जो मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का संकेत देती हैं।

4. व्यापार और वाणिज्य

- ✓ हड़प्पावासियों ने मेसोपोटामिया (प्राचीन फारस/ईरान) जैसे क्षेत्रों के साथ व्यापार किया।
- ✓ व्यापार वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था क्योंकि धातु मुद्रा का उपयोग नहीं होता था।
- ✓ निर्यात की वस्तुएँ ताँबा, सोना, कपास के वस्त्र, मनके और लाजवर्द थी जबकि आयात की वस्तुएँ सोना और टिन (अफगानिस्तान), जेड पत्थर (मध्य एशिया/चीन), ताँबा (ओमान/अफगानिस्तान) और फ़िरोज़ा (ईरान) आदि थी।
- ✓ नोट: हड़प्पावासी लोहे से परिचित नहीं थे।

5. कला एवं शिल्प:

- ✓ कांस्य ढलाई के लिए विलुप्त मोम तकनीक का उपयोग किया जाता था।
- ✓ पत्थर की मूर्तियों में दाढ़ी वाला पुरुष (स्टीटाइट, मोहनजोदड़ो) और पुरुष धड़ (लाल बलुआ पत्थर, हड़प्पा) शामिल हैं।

6. मुहरें

- ✓ मुहरें स्टियटाइट पत्थर/सेलखड़ी की बनी होती थी; प्रायः वर्गाकार (2×2 सेमी); मुख्यतः व्यापारिक उपयोग।
- ✓ इन पर लगभग 26 चिह्नों वाली लिपि अंकित थी; सबसे लंबी हड़प्पा मुहर मिली है।
- ✓ मुहरों पर **एक-सींग वाले गैंडे** और **कूबड़ वाले बैल** का चित्रांकन सबसे सामान्य था।
- ✓ **पशुपति मुहर** पर भैंसे के सींग वाला मुकुट पहने तथा पद्मासन में बैठे एक त्रि-मुखी देवता को दर्शाया गया है जिसके चारों ओर हाथी, बाघ, भैंस, गैंडा और दो हिरण हैं; यह धार्मिक प्रतीक के रूप में मानी जाती है।
- ✓ मेसोपोटामिया की मुहरें बेलनाकार थी, जिन पर मिट्टी से सतत आकृतियाँ बनी हुई थी।

7. लिपि

- ✓ हड़प्पा लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन ज्ञात लिपि मानी जाती है किन्तु इसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है।
- ✓ यह चित्रात्मक लिपि थी जिसमें लगभग 250–400 प्रतीक थे।
- ✓ यह **दाएँ से बाएँ** लिखी जाती थी।

सिंधु सभ्यता के पतन का कारण और संबंधित विद्वान	
पतन का कारण	विद्वान
जलवायु परिवर्तन	ऑरेल स्टीन, ए. एन. घोष
भूवैज्ञानिक परिवर्तन	एम. आर. साहनी
प्राकृतिक आपदा	के. यू. आर. केनेडी
बाढ़	मैकी और मार्शल
आर्य आक्रमण	गॉर्डन चाइल्ड और व्हीलर
पारिस्थितिक असंतुलन	फेयरसर्विस



- वैदिक सभ्यता सिंधु सभ्यता के बाद अस्तित्व में आई और इसे ऋग्वैदिक/प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ईसा पूर्व) तथा उत्तरवैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है।

वेद

- वेद शब्द 'विद्' (जानना) धातु से बना है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेद चार हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। वेदत्रयी शब्द ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को संदर्भित करता है।

1. ऋग्वेद

- ✓ ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद है और इसे "मानवता का प्रथम विधान" कहा गया है। इसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन है, भरत नामक कुल (जिससे बाद में भारत/इंडिया बना) का उल्लेख है और इसमें 1,028 सूक्त (10,580 ऋचाएँ) हैं, जिनमें 11 बालखिल्य सूक्त भी जोड़े गए हैं।
- ✓ इसमें पहली बार "स्तूप" का उल्लेख मिलता है (प्रारंभिक ब्राह्मी लिपि में) तथा "निष्क" का भी उल्लेख मिलता है जो पहले गले का आभूषण था और बाद में सोने का सिक्का बन गया। इसमें विभिन्न धातुओं (अयस) का भी उल्लेख है।
- ✓ ऋग्वेद से संबंधित पुरोहित को " होतृ" कहा जाता है।

2. सामवेद

- ✓ सामवेद में कुल 1,810 मंत्र हैं, जिनमें अधिकांश ऋग्वेद से लिए गए हैं। इन्हें संगीतात्मक रूप में व्यवस्थित किया गया है, जिससे यह ऋग्वैदिक ऋचाओं का संगीतमय संस्करण बन जाता है। यह राग, रागिनी और ध्रुपद का आधार है।
- ✓ इसे पूर्वार्चिक (6 उपविभाजन/आपाठक) और उत्तरार्चिक (9 उपविभाजन/प्रपाठक) में विभाजित किया गया है। सामवेद से संबंधित पुरोहित को "उद्गाता" कहा जाता है।

3. यजुर्वेद

- ✓ यजुर्वेद को "कर्मकांड वेद" या यज्ञ प्रार्थनाओं का ग्रंथ कहा जाता है। यह वेद मुख्यतः अनुष्ठानों और यज्ञों पर केंद्रित है, इसमें लगभग 2,000 मंत्रों के साथ कुल 40 अध्याय हैं।
- ✓ दो प्रमुख ग्रंथः
 - कृष्ण यजुर्वेद: यह मंत्र (सूक्त) एवं पद्य का मिश्रण है।
 - शुक्ल (श्वेत) यजुर्वेद: इसमें गद्य रूप में भाष्य होता है।
- ✓ इसका अंतिम अध्याय ईशोपनिषद् है, जिसमें दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों की चर्चा की गई है, जबकि अन्य भागों में यज्ञों के नियम और विधियों का वर्णन है। इससे संबंधित पुरोहित "अध्वर्यु" कहलाता है और इसका उपवेद "धनुर्वेद" (धनुर्विद्या) है।

4. अथर्ववेद

- ✓ अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे अंतिम है और इसे "ब्रह्मवेद" या "अथर्वांगिरस वेद" भी कहा जाता है। इसमें कुल 731 सूक्त (~5,987 मंत्र) हैं, जिनमें लगभग 1,200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसमें ताबीज, जादुई प्रयोग और तंत्र-मंत्र संबंधी विधियाँ शामिल हैं जो जनसामान्य की आस्थाओं और बुरी शक्तियों से निपटने के उपायों को दर्शाते हैं।
- ✓ यह 20 खण्डों (काण्ड) में विभाजित है और इसकी दो प्रमुख शाखाएँ हैं—शौनक और पैप्पलाद। प्रारंभ में यह वेदत्रयी (तीन मूल वेदों) का हिस्सा नहीं था।
- ✓ इसमें "सभा" और "समिति" (जनसभा और परिषद्) का भी उल्लेख मिलता है। इससे संबंधित पुरोहित को 'ब्रह्मा' कहा जाता है।

ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथ सरल गद्य में रचित होते हैं और इनका मुख्य केंद्र बिंदु यज्ञ होता है (ब्रह्मा = यज्ञ)। प्रत्येक वेद के साथ उसके अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ जुड़े होते हैं।

वेद	ब्राह्मण ग्रंथ / विवरण	पुरोहित / टिप्पणी
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण (राज्याभिषेक विधि का वर्णन करता है), कौषीतकि ब्राह्मण	होतृ पुरोहितों द्वारा रचित
यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण → कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित शतपथ ब्राह्मण → शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित (शतपथ ब्राह्मण अध्वर्यु पुरोहित याज्ञवल्क्य द्वारा रचित है)	—
सामवेद	तांड्य महाब्राह्मण, छांदोग्य (खादिर/खांडोग्य) ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण	उद्गातृ पुरोहितों द्वारा रचित
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण	—

आरण्यक

- ये ब्राह्मण ग्रंथों का अंतिम भाग है; इनमें यज्ञ एवं योग सहित दार्शनिक तथा रहस्यात्मक विषयों की चर्चा है; इनका पठन वनों में किये जाने के कारण इन्हें "आरण्यक" कहा गया। कुल 7 आरण्यक उपलब्ध हैं: ऐतरेय, सांख्ययन, तैत्तिरीय, मैत्रायणी, मध्यंदिन, तलवाकार, जैमिनीय।

उपनिषद

- "उपनिषद" शब्द "उप + नि + सद्" से बना है जिसका अर्थ है — "गुरु के समीप बैठकर गुप्त ज्ञान प्राप्त करना"। कुल 108 उपनिषद (13 मुख्य) हैं जो वैदिक विचारों की आध्यात्मिक और तात्त्विक व्याख्या करने वाले दार्शनिक ग्रंथ हैं तथा ये बलि जैसे कर्मकांड की बजाय ज्ञान, ध्यान और त्याग पर बल देते हैं।

मुख्य उपनिषद:

- **बृहदारण्यक उपनिषद** → सबसे प्राचीन → इसमें याज्ञवल्क्य और गार्गी वाचकनवी के बीच दार्शनिक संवाद है।
- **मुण्डकोपनिषद** → सबसे विस्तृत; इसमें "सत्यमेव जयते" वाक्य का उल्लेख मिलता है।
- **छांदोग्य उपनिषद** → इसमें पहले तीन आश्रमों की चर्चा होती है और ऋषि सत्यकाम जबाल की कथा वर्णित है।
- **कठोपनिषद** → यह नचिकेता और यम के बीच संवाद पर आधारित है।

वेदांग (वेदों के छह अंग) - उत्तर वैदिक काल

1. **शिक्षा** → मंत्रों का उच्चारण → मुख्य बल : सही उच्चारण पर।
2. **कल्प** → अनुष्ठान, कर्तव्य, संस्कार → मुख्य बल: बलिदान और समारोहों की प्रक्रिया।
3. **व्याकरण** → व्याकरण, भाषा विज्ञान → मुख्य बल: भाषा के नियम।

4. **निरुक्त** → व्युत्पत्ति → मुख्य बल: शब्दों की उत्पत्ति और अर्थ (प्रसिद्ध: यस्का का निरुक्त)।
5. **छंद** → मात्राएँ / काव्य संरचना → मुख्य बल: छंद, लय (पिंगल का छंदसूत्र)।
6. **ज्योतिष** → खगोल विज्ञान और कैलेंडर → मुख्य बल: अनुष्ठानों के लिए सूर्य, चंद्रमा, ग्रहों की गणना (ज्योतिष वेदांग - 400 छंद)

18 पुराण: ब्रह्मा, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्म-वैवर्त्य, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड।

प्रारंभिक/पूर्व वैदिक काल

(1500-1000 ईसा पूर्व)



- इंडो-यूरोपीय भाषा बोलने वाले आर्य लोग अर्ध-घुमंतू पशुपालक थे जो प्रारंभिक संस्कृत बोलते थे (ये अवेस्ता, यूनानी और लैटिन से संबंधित थी)।
- इन्होंने लगभग 1500 ईसा पूर्व में खैबर दर्रे के माध्यम से कई चरणों में भारत में प्रवेश किया (कुछ ईरान के रास्ते, जैसा कि जेंद अवेस्ता में उल्लेख है)। 'आर्य' शब्द 'अर' (विदेशी/अजनबी) से व्युत्पन्न है। पहला ऐतिहासिक उल्लेख भगारकाई शांति संधि (1350 ई.पू.) में मिलता है जिसमें आर्य देवताओं वरुण, इंद्र, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
- आर्य सबसे पहले पंजाब क्षेत्र में बसे और बाद में पूर्व की ओर गंगा के मैदान तक फैल गए। अफगानिस्तान से पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक का क्षेत्र सप्तसैंधव (सात नदियों की भूमि) कहलाता था, जिसमें सिंधु (इंडस), वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चिनाब), परुष्णी (रावी), विपाशा (ब्यास), शुतुद्रि (सतलज) और सरस्वती (घग्गर-हकरा) नदियाँ शामिल थी।

➤ आर्य समाज की मूल इकाई 'कुल' (परिवार) थी। कई परिवार मिलकर ग्राम (गाँव) बनाते थे, जिसका मुखिया 'ग्रामणी' होता था। गाँव मिलकर विष (कुल या जिला) और कई विष मिलकर जन (जनजाति) बनाते थे, जिसका नेतृत्व राजन (मुखिया/राजा) करता था जो वंशानुगत होता था परंतु पूर्णतया नहीं क्योंकि यह सभा (बुजुर्गों की परिषद), समिति (सामान्य सभा) और विदथ (जनसभा) से परामर्श लेकर शासन करता था। सेनानी (सैन्य प्रमुख) सेना का नेतृत्व करता था, जनजाति की रक्षा करता था, बलि (उपहार/कर) प्राप्त करता था और पुजारी वर्ग का शक्तिशाली प्रभाव था जो राजा की शक्ति पर नियंत्रण रखते थे।

➤ आर्य पशुपालक थे जो संयुक्त परिवार में रहते थे, जिसका मुखिया गृहपति (पिता) होता था। महिलाओं को सम्मान प्राप्त था; वे नृत्य, कुश्ती और मुक्केबाजी में भाग लेती थी, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने, मनपसंद का विवाह और पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता थी। अपाला, घोषा, विश्ववारा और लोपामुद्रा जैसी प्रसिद्ध विदुषी महिलाएँ इसी काल से संबंधित थीं।

विवाह के प्रकार		
विवाह का प्रकार	मुख्य विशेषता	सामाजिक स्वीकृति
ब्रह्म विवाह	कन्या को अच्छे चरित्र वाले विद्वान पुरुष को दान में देना; दहेज का चलन नहीं	सर्वाधिक स्वीकृत (आदर्श)
दैव विवाह	कन्या का विवाह यज्ञ के पुरोहित से दक्षिणा के रूप में किया जाता था	स्वीकृत
आर्ष विवाह	प्रतीकात्मक रूप से वर को एक गाय और एक बैल दिया जाता था (वधू मूल्य के रूप में)	स्वीकृत
प्रजापत्य विवाह	कर्तव्य और साहचर्य के आशीर्वाद के साथ विवाह	स्वीकृत
आसुर विवाह	धन या दहेज देकर वधू को खरीदा जाता था	अस्वीकृत
गंधर्व विवाह	आपसी प्रेम और सहमति से हुआ विवाह	अस्वीकृत किन्तु कम कठोरता
राक्षस विवाह	बलपूर्वक या अपहरण द्वारा विवाह (युद्धकाल में प्रचलित)	अस्वीकृत, किन्तु क्षत्रियों के लिए अनुमेय
पैशाच विवाह	सोती हुई, नशे में या असहाय कन्या के साथ बलपूर्वक संबंध बनाकर विवाह करना	अत्यंत निंदनीय

आर्थिक जीवन

➤ आर्यों की अर्थव्यवस्था शुरू में पशुपालन पर आधारित थी जिसमें मवेशी ही धन का माप होते थे; बाद में गाँव बसने के साथ कृषि मुख्य व्यवसाय बन गया; मवेशी प्रजनन समृद्धि का संकेत देता था (धनवान व्यक्ति = गोमत) और ऋग्वेद के गव्युति और गोधूलि जैसे शब्द आर्थिक संदर्भों को दर्शाते हैं।

धर्म

➤ **मुख्य देवता:** इंद्र (पुरंदर, वृत्रहन; वर्षा, वज्र, युद्ध; लगभग 250 सूक्त), अग्नि (अग्नि, मध्यस्थ; लगभग 200 सूक्त), वरुण (ब्रह्मांडीय व्यवस्था/ऋत, जल, नैतिकता), सोम (देवीकृत पेय), रुद्र (तूफान, आरोग्यदाता), यम (मृत्यु), पूषन, विष्णु, मरुत।

➤ **देवियाँ:** अदिति (अनंत काल), उषा (भोर), सावित्री/गायत्री, सिनीवाली (उर्वरता), आख्यानी (वन)।
 ➤ नदियों में, वैदिक ग्रंथों में सबसे अधिक उल्लेख सरस्वती और सिंधु का है, जबकि गंगा को जाह्नवी और यमुना को अंशुमती कहा जाता था।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)

➤ ऋग्वैदिकोत्तर स्रोत समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और धर्म में परिवर्तन दर्शाते हैं। आर्य 1500-800 ईसा पूर्व और 500 ईसा पूर्व तक गंगा और यमुना के मैदानों में फैल गए, जो शुरू में पंजाब में थे।



राजनीतिक व्यवस्था

- प्रारंभिक जनजातीय बस्तियाँ वंशानुगत राजशाहियों और गणराज्यों के उदय के साथ शक्तिशाली राज्यों में परिवर्तित हो गईं। राजस्व संग्रह और श्रम-नियोजन ने राज्य के विस्तार को समर्थन दिया। सभाओं का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगा और राजा (सम्राट) अधिक शक्तिशाली हो गया। उसने नियमित सेना बनाए रखी जिसमें राजन्य (क्षत्रिय) योद्धा के रूप में कार्य करते थे। प्रमुख विधि-निर्माताओं में मनु (मनुस्मृति), नारद और बृहस्पति शामिल थे।।

सामाजिक व्यवस्था

- अयोध्या, इंद्रप्रस्थ और मथुरा जैसे नगरों का विकास हुआ। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई तथा उन्हें सभा से बाहर रखा गया, उत्तराधिकार और संपत्ति के अधिकार से वंचित किया गया तथा ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पुत्री को बोझ माना गया।
- शूद्रों और स्त्रियों को वैदिक शिक्षा, गायत्री मंत्र और उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- ब्राह्मण समाज में एक सम्मानित पुजारी वर्ग के रूप में प्रतिष्ठित हुए।
- गोत्र प्रणाली ने वंश परंपरा पर बल दिया।
- चांडाल (अस्पृश्य) वर्ण व्यवस्था से बाहर माने जाते थे।
- प्रचलित धातुओं में सोना, तांबा/लोहा, टिन, सीसा और चांदी शामिल थी।

आर्थिक व्यवस्था

- प्रमुख व्यवसायों में कृषि, पशुपालन, व्यापार और उद्योग शामिल थे।
- लगभग 1200 ईसा पूर्व तक कृष्ण अयस (लोहा) ज्ञात था और 800 ईसा पूर्व तक कुल्हाड़ी व हल जैसे औजारों का व्यापक उपयोग होने लगा।
- भूमि परिवार-आधारित होती थी जिसका संचालन गृहपति (परिवार मुखिया) करता था।
- व्यापारी श्रेणियों (गिल्डों) में संगठित थे जिनका नेतृत्व श्रेष्ठिन् करते थे।

- मूल्य की इकाइयाँ थी — निष्क (स्वर्ण), शतमान (सौ इकाई) और कृष्णाल (1 रत्ती)।
- कर अनिवार्य था, मुख्यतः वैश्य वर्ग पर लगाया जाता था। कर-संग्राहक को 'भागदुघ' तथा कोषाध्यक्ष को 'संग्रहीत्री' कहा जाता था।

धर्म

- इस काल को ब्राह्मणीय युग कहा जाता है, जिसमें सरल उपासना पद्धति जटिल यज्ञों में परिवर्तित हो गई।
- वरुण, पृथ्वी, इंद्र, अग्नि जैसे प्रचलित देवताओं का महत्व कम होने लगा जबकि प्रजापति (सृष्टिकर्ता), विष्णु और रुद्र जैसे नए देवता प्रमुख होने लगे।
- प्रमुख ग्रंथों में यज्ञों पर केंद्रित संहिताएँ और ब्राह्मण ग्रंथ शामिल थे।
- कर्म, माया, पुनर्जन्म और आत्मा (ब्रह्म) जैसे दार्शनिक सिद्धांतों की अवधारणा प्रस्तुत हुई। इन विचारों का प्रथम दार्शनिक प्रतिपादन उपनिषदों में हुआ।
- प्रमुख सूत्र ग्रंथों में श्रौत सूत्र (सार्वजनिक यज्ञ), गृह्य सूत्र (घरेलू संस्कार), धर्म सूत्र (सामाजिक कर्तव्य एवं नैतिक आचरण), और शुल्व सूत्र (यज्ञ वेदियों का निर्माण व ज्यामिति) शामिल थे।
- अत्यधिक कर्मकांड और पुजारी वर्चस्व से असंतोष के कारण जैन धर्म और बौद्ध धर्म जैसे सुधारवादी धर्मों का उदय हुआ।

वर्ण व्यवस्था

- प्रारंभ में केवल तीन वर्ण थे — ब्राह्मण (पुरोहित), क्षत्रिय (योद्धा) और वैश्य (सामान्य जन)।
- बाद में चौथा वर्ण शूद्र (श्रमिक/सेवक) जोड़ा गया।
- समाज के बाहर रहने वाले चांडालों को पाँचवें वर्ग के रूप में माना गया।
- परिणामस्वरूप चार वर्णों की व्यवस्था स्थापित हुई:
 - ✓ ब्राह्मण – पुरोहित
 - ✓ क्षत्रिय – योद्धा / शासक
 - ✓ वैश्य – व्यापारी / कृषक
 - ✓ शूद्र – सेवक / श्रमिक



- मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी। पुराणों में मौर्यों को 'शूद्र' कहा गया है और कुमराहार स्थित पुरातात्विक स्थल मौर्य राजधानी पाटलिपुत्र के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करता है।

महत्वपूर्ण शासक



चंद्रगुप्त मौर्य (324–297 ईसा पूर्व)

- भारतवर्ष के पहले अखिल भारतीय साम्राज्य के निर्माता चंद्रगुप्त मौर्य मुरा के पुत्र थे (जो एक शिकारी की पुत्री थी और विष्णु पुराण के अनुसार शूद्र वर्ग से संबंध रखती थी)। उन्होंने गुरु चाणक्य (कौटिल्य) के मार्गदर्शन में पाटलिपुत्र में नंद वंश को पराजित किया और उत्तर-पश्चिम भारत में सिकंदर के शासकों (सत्रपों) को हराया। चंद्रगुप्त ने एक यूनानी राजकुमारी से विवाह कर यूनानियों से गठबंधन किया और पारोपमिसाद, अराकोसिया और गेट्रोसिया के प्रदेशों को प्राप्त किया।

- इन्होंने जैन धर्म अपनाया; सिंहासन अपने पुत्र बिंदुसार को सौंपकर श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में संलेखना (आध्यात्मिक उपवास द्वारा मृत्यु) का व्रत लिया।

प्रशासन

- मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में केंद्रीकृत शासन व्यवस्था थी जिसमें शासन को केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर विभाजित किया गया था। प्रमुख अधिकारियों में सचिव/अमात्य, मंत्री, पुरोहित (उच्च पुरोहित), गुप्तचर और विभागाध्यक्ष शामिल थे। नगर प्रशासन का संचालन छह समितियों द्वारा किया जाता था जबकि नागरिक और सैन्य मामलों की देखरेख के लिए 24 विभाग थे। एक विशाल स्थायी सेना थी जिसकी निगरानी छह सैन्य बोर्ड करते थे और चाणक्य प्रधानमंत्री के रूप में कार्यरत थे।

मेगस्थनीज़ की 'इंडिका'

- चंद्रगुप्त मौर्य (जिन्हें यूनानियों ने "सैंड्रोकोटस" कहा) ने एक ऐसे समाज पर शासन किया जहाँ दासप्रथा नहीं थी। समाज को सात वर्गों में विभाजित किया गया था जिसमें सातवाँ वर्ग राजकीय सलाहकारों का था। उन्होंने युद्ध में हाथियों का उपयोग किया और पाटलिपुत्र को 64 द्वारों और विशाल दुर्ग प्रणालियों से सुसज्जित कर सुदृढ़ किया था।

बिंदुसार (297–272 ईसा पूर्व)

- बिंदुसार, चंद्रगुप्त मौर्य और रानी दुर्धरा के पुत्र थे। यूनानियों द्वारा उन्हें "अमित्रघात" (शत्रुओं का संहारक) कहा जाता था। उन्होंने 16 राज्यों को जीतकर मौर्य साम्राज्य का विस्तार लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप तक कर दिया (केवल कलिंग और कुछ दक्षिणी क्षेत्र छोड़कर)। वे आजीवक संप्रदाय के संरक्षक थे, साथ ही उन्होंने बौद्ध और जैन धर्मों के प्रति भी सहिष्णुता दिखाई।

अशोक (268–232 ईसा पूर्व)



➤ अशोक बिंदुसार के पुत्र और उज्जैन के पूर्व-राज्यपाल थे। वे 268 ईसा पूर्व में उत्तराधिकार संघर्ष के बाद सम्राट बने। उन्होंने "देवनामपिय" (देवों का प्रिय), "प्रियदर्शी" (जो देखने में प्रिय लगे) और बाद में "धर्माशोक" की उपाधियाँ ग्रहण की। अशोक को विश्व इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।

कलिंग युद्ध और परिवर्तन

➤ **कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व):** भूमि और समुद्री मार्गों के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण; भारी जनहानि और विनाश जिसने अशोक को गहरा आघात पहुँचाया; इसके बाद अशोक ने युद्ध त्यागकर **बौद्ध धर्म** अपनाया और **चक्रवर्ती सम्राट** बन गए। उन्होंने **भेरिघोष** (युद्ध नगाड़ा) के स्थान पर **धम्मघोष** (धर्म का नगाड़ा) को शांति पूर्ण विजय (**धर्म-विजय**) का प्रतीक बना दिया।

शिलालेख (धम्मलेख)

➤ जनता को प्रत्यक्ष संदेश भेजने वाले अशोक भारत के पहले शासक; इनमें प्राकृत, यूनानी और अरामाईक भाषाओं तथा ब्राह्मी (बाएँ से दाएँ) एवं खरोष्ठी लिपि (दाएँ से बाएँ) का प्रयोग किया गया; उन्होंने कुल **33 शिलालेख** (14 प्रमुख शिला लेख, 7 स्तंभ लेख, 2 कलिंग शिला लेख और कई लघु लेख) जारी किये: ये लेख भारत और बाहर के क्षेत्रों में स्थापित किए गए, जैसे: **धौली, जौगड़, कालसी, मानसेहरा, शाहबाज़गढ़ी, सोपारा, मास्की, टोपरा, बैराट, सुवर्णगिरि**। बाद में इन्हें सर्वप्रथम **1837 ईस्वी** में जेम्स प्रिन्सेप द्वारा पढ़ा गया।

शिला लेखों की विषयवस्तु

शिला लेख संख्या	विषय / विषयवस्तु
पहला	पशु बलि पर प्रतिबंध
दूसरा	सामाजिक कल्याण के उपाय
तीसरा	माता-पिता के प्रति सम्मान
चौथा	धम्म का प्रभाव और पशुओं के प्रति अहिंसा

पाँचवा	धम्म के प्रचार हेतु धम्ममहामात्रों की नियुक्ति
छठा	जनकल्याण की योजनाएँ और कुशल प्रशासन
सातवाँ	शांति, मानसिक संतुलन, श्रद्धा और सहिष्णुता
आठवाँ	अशोक की पहली बोधगया यात्रा और बोधिवृक्ष दर्शन (धम्म यात्रा)
नौवाँ	अर्थहीन समारोहों (जन्म, विवाह आदि) की निंदा की।
दसवाँ	धम्म को लोकप्रिय बनाने की अशोक की इच्छा
ग्यारहवाँ	धम्म की प्रशंसा और धार्मिक सहिष्णुता
बारहवाँ	विभिन्न आस्थाओं का संवर्धन
तेरहवाँ	कलिंग युद्ध का वर्णन, यूनानी शासकों का उल्लेख और युद्ध से धम्म-विजय की ओर परिवर्तन
चौदहवाँ	लोक समझ के लिए धम्म अभिलेखों का सारांश।

प्रसिद्ध शिलालेख

- **कलिंग शिलालेख I:** अधिकारियों की निष्पक्षता और हर पाँच वर्षों में निरीक्षण का प्रावधान।
- **मास्की शिलालेख (कर्नाटक):** यह पहला शिलालेख है जिसमें *अशोक* का नाम स्पष्ट रूप से अंकित है जिससे अशोक का नाम 'देवनामपिय पियदर्शी' होने की पुष्टि होती है।
- **शाहबाज़गढ़ी शिलालेख (पाकिस्तान):** खरोष्ठी लिपि में लिखित; अशोक के धम्म सिद्धांतों का उल्लेख।
- **भाब्रू-बैराट शिलालेख (राजस्थान):** अशोक की बौद्ध धर्म में व्यक्तिगत आस्था को दर्शाता है।

स्तंभलेख

- **7 प्रमुख स्तंभ** – मेरठ, दिल्ली-टोपरा, प्रयाग (इलाहाबाद), लौरिया-अरेराज, लौरिया-नंदनगढ़, रामपुरवा (2 स्तंभ)।

- **4 लघु स्तंभ** - सांची, सारनाथ, इलाहाबाद, निगाली सागर।
- **तराई स्तंभ (रुम्मिनदेई / लुंबिनी)**: अशोक द्वारा बुद्ध के जन्मस्थल की यात्रा के स्मरण में स्थापित।
- **संकीसा स्तंभ** (उत्तर प्रदेश) - एक विशाल हाथी की प्रतिमा वाला स्तंभ।
- ये सभी शिलालेख और स्तंभ अशोक की *धम्म नीति* के प्रमुख स्रोत हैं।

अशोक का धम्म

- 'धम्म' शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका अर्थ है धार्मिक कर्तव्य; यह अहिंसा, करुणा, सत्य, सहिष्णुता, सामाजिक कल्याण और बड़ों तथा सभी संप्रदायों के प्रति सम्मान पर आधारित है; यह कर्मकांड की बजाय नैतिकता पर बल देता था और इसका उद्देश्य दिग-विजय (युद्ध के माध्यम से विजय) के बजाय धर्म-विजय (धर्म के माध्यम से विजय) था।

धार्मिक नीति एवं मिशनरी प्रयास

- अशोक का धम्म किसी धार्मिक अनुष्ठान की बजाय एक नैतिक और सदाचारयुक्त जीवनशैली पर आधारित था। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता (बराबर की गुफाओं में आजीवक संप्रदाय को संरक्षण) को बढ़ावा दिया, शाही शिकार के स्थान पर धम्म यात्राएँ आरंभ की, मोगगलिपुत्त तिस्स के अधीन तीसरी बौद्ध संगीति (250 ईसा पूर्व, पाटलिपुत्र) का आयोजन किया; उन्होंने धम्म प्रचार के लिए मिशनरियों को विदेशों में भेजा जैसे: सीरिया, मिस्र, यूनान, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया। अशोक ने अपने पुत्र महेंद्रा/महिंदा और पुत्री संघमित्रा को बोधिवृक्ष की एक शाखा के साथ श्रीलंका भेजा। उन्होंने बौद्ध स्थापत्य का संरक्षण किया, विशेष रूप से सांची स्तूप का निर्माण करवाया जो भारत के सबसे प्राचीन पत्थर के स्मारकों में से एक है।

अशोक के अधीन प्रशासन

- अशोक का प्रशासन कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर आधारित था जिसमें कानून के चार स्रोत (धर्म, व्यवहार, चरित्र, राजशासन) थे; उसके पांच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे (पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जैन, तोसली, सुवर्णगिरि) और वह एक पितृसत्तात्मक राजा था जिसने नैतिकता को बढ़ावा दिया, राजधानी में पशु वध पर प्रतिबंध लगाया, जन्म और मृत्यु पंजीकरण का आयोजन किया और एक कुशल गुप्तचर व्यवस्था बनाए रखी।
- **मुख्य अधिकारी:**
 - ✓ राजक/रज्जुक - न्यायिक अधिकारी।
 - ✓ धम्म महामात्र - धम्म का प्रचार करने वाले।
 - ✓ पातिवेदक - राजकीय संदेशवाहक।
 - ✓ युक्त - राजस्व एवं जनकल्याण प्रशासन के अधिकारी।
 - ✓ पुलिसानी - जनमत एकत्र करने वाले अधिकारी।

अशोकोत्तर काल

- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक ने 27 वर्षों तक शासन किया। उनकी मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य तीव्रता से कमजोर होने लगा और सीमित या दुर्लभ स्रोतों के कारण यह एक अंधकारमय काल में प्रवेश कर गया। अशोक के पुत्रों में तिवर, कुणाल, जलूक और महेन्द्र शामिल थे। संप्रति ने सीमित समय के लिए सिंहासन संभाला। मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या कर दी गई, जिससे लगभग 137 वर्ष पुराने मौर्य साम्राज्य का अंत हो गया — जो अशोक की मृत्यु के लगभग 50 वर्षों के भीतर समाप्त हो गया।